शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

foKfIr

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

rjkiFk dh dUnh; xfrfofèk;k dk lokfèkd ykdfi; lkIrkfgd e[ki=k

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १७ : अंक ५२ : नई दिल्ली : १-७ अप्रेल २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी जसोल की ओर विहार करते हुए सोजतरोड पधार गए हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। पूज्य आचार्यप्रवर स्वस्थ और प्रसन्न हैं। ४ अप्रेल को पाली, २० अप्रेल को आसोतरा व २६ मई को समदड़ी पधार जाएंगे। यहां दीक्षा का आयोजन होगा। पूज्यप्रवर ६ जून को पचपदरा पधारेंगे। यहां लगभग बीस दिन बिराजेंगे। २६ जून को चतुर्मास हेतु जसोल में प्रवेश करेंगे।

ije J); vkpk;ioj dk exy mnckèku

चैत्र कृष्णा चतुर्दशी। गुड़ा रामसिंह प्रवास का दूसरा दिन। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने चतुर्विध धर्मसंघ की उपस्थिति में हाजरी का वाचन किया। साधु-साध्वियों और श्रावक-श्राविकाओं के लिए पूज्यप्रवर का वह प्रेरणास्पद मंगल उद्‌बोधन यहां प्रस्तुत है--

''संबोधि के सोलहवें अध्याय में कहा गया है--

y';kfHkjipi'kLrkfHkee{kk! njrk otA
i'kLrkl p y';kl] ekul fLFkjrk u; Ï

जैन वांङ्मय में एक शब्द आता है--लेश्या। यह बहुत अर्थवान शब्द है। लेश्या को मैं बहुत सरल भाषा में बताना चाहूं तो कह सकता हूं--भावधारा। आदमी की भावधारा प्रशस्त भी होती है और अप्रशस्त भी होती है। लेश्या के भी दो प्रकार हैं--अप्रशस्त लेश्या और प्रशस्त लेश्या। संबोधि में मुमुक्षु को संबोधित कर या मेघकुमार को संबोधित कर अथवा मेघ के माध्यम से हम सबके लिए कहा गया कि तुम अप्रशस्त लेश्याओं से दूर जाओ, दूर रहो और प्रशस्त लेश्याओं में अपने मन को स्थिर करने का प्रयास करो।

जब-जब हमारी विचारधारा कलुषित होती है, हम अप्रशस्त लेश्याओं में चले जाते हैं और विचारधारा पवित्र रहती है तो हम प्रशस्त लेश्याओं में विद्यमान रहते हैं। एक साधु के लिए तो विशेष रूप से वांछनीय है कि वह प्रशस्त लेश्या में या विचार में रहे, शुभ योग में रहे। योग और लेश्या--ये दोनों शब्द जैन वाङ्मय में आते हैं। दोनों में काफी नैकट्य है। जयाचार्य ने तो यहां तक कह दिया कि योग और लेश्या में क्या अन्तर है, इस रहस्य को भगवान जानते हैं। दोनों में इतनी एकात्मकता और नैकट्य है। एक साधु जागरूक रहता है। वह मानों काफी अंशों में या पूर्ण अंशों में अपने आप में रहता है। जागरूकता किसमें रखें? उत्तर होगा--अपने आचार के प्रति जागरूकता रखें।

साधु जागरूक रहे अपने आचार के प्रति। हमारे मर्यादा पत्र का महत्त्वपूर्ण घोष है--सर्व साधु-साध्वियां पंच महाव्रत, पांच समिति और तीन गुप्ति की अखंड आराधना करें। यह हमारा जीवन है। पांच महाव्रत हमारा जीवन है और पांच महाव्रतों की सुरक्षा के लिए पांच समितियां और तीन गुप्तियां पहरेदार के रूप में खड़ी हैं, जिससे पांच महाव्रतों को आंच न आने पाए। जैसे बड़े-बड़े राजनेताओं की सुरक्षा के लिए विशेष कमांडो दस्ता तैनात रहता है, बॉडीगार्ड रहते हैं, सुरक्षा प्रहरी रहते हैं, वैसे ही पांच महाव्रतों के लिए पांच समिति और तीन गुप्ति सुरक्षा प्रहरी का काम करते हैं। पांच महाव्रतों से बड़ा कौन हो सकता है? कोई नहीं। इसलिए इतनी बड़ी, प्रमुख व महत्त्वपूर्ण चीज के लिए आठ सुरक्षा प्रहरी तैनात कर दिए

गए। जैसे मां अपने बच्चे को संरक्षण देती है, वैसे ही ये समिति-गुप्तिरूपी आठ प्रवचन माताएं हमें आध्यात्मिक संरक्षण देने वाली होती हैं।

मां बच्चे का ध्यान रखती है तो बच्चे का भी काम है कि वह मां का ध्यान रखे। मां बच्चे का कितना ध्यान रखती है। वह बच्चे की सेवा के लिए पूरी तरह से समर्पित रहती है। खुद कष्ट भोग लेती है, पर बच्चे को कभी कोई कष्ट न हो, ऐसा प्रयास करती है। उसमें कितनी ममता और सेवा भावना होती है। लेकिन बच्चे अपनी मां का इतना ध्यान कहां रख पाते हैं? एक प्रसंग है--

एक युवक उच्च शिक्षा प्राप्त कर अफसर बन गया। अफसर बनते ही उसके रहन-सहन में ही नहीं, भावों और विचारों में भी परिवर्तन आ गया। उससे काफी लोग मिलने के लिए आते। उसकी मां उसके साथ ही रहती थी। एक आंख खराब हो जाने के कारण वह एकाक्षी थी। अफसर बेटे को यह बात अखरती थी। लोग उसे एकाक्षी मां का बेटा कहते होंगे, यह कुंठा जैसे उसके मन में समा गई। अपनी प्रतिष्ठा और स्टेटस का ध्यान रखते हुए उसने मां को अलग रखने का निश्चय कर लिया। असली कारण को छिपा कर उसने मां के सामने कुछ छोटे-मोटे कारण बताते हुए पूछा कि उसे अलग रहने में कोई असुविधा तो नहीं होगी? मां को एक बार तो धक्का-सा लगा, किन्तु इसके पीछे बेटे के मन में छिपी भावना को वह समझ गई। वृद्ध और विवश उस मां ने बेटे की बात स्वीकार कर ली। मां के लिए उसने एक छोटे से घर का प्रबंध कर उसके भोजन आदि की व्यवस्था कर दी और एक प्रकार से उसने अपनी मां से मुक्ति ले ली।

उपेक्षा का दंश झेलते हुए उस मां ने जीवन के कुछ दिन गुजारे और एक दिन बेटे की अनुपस्थिति में एकाकी वह चल बसी। अफसर बेटे को सूचना मिली। उसने मरने के बाद की सारी औपचारिकताएं पूरी कीं, फिर मां की गठरी खोलकर उसके सामान की जांच की तो उसमें एक लिफाफा मिला। लिफाफे को खोला तो उसमें एक पत्र मिला, जो मां के द्वारा ही लिखा गया था। पत्र में उस वृद्धा ने अपने बेटे को संबोधित कर लिखा था--'बेटा! काफी दिनों से तुम्हारा कोई संवाद नहीं मिला। तुमसे दूर रहकर मैं तुम्हारे लिए चिंतित हूं। जिस दिन तुमने मुझे अपने से अलग रखने की बात कही थी, उसी दिन कारण मेरी समझ में आ गया था। लेकिन तुमसे क्या कहती? तुम्हारी खुशी में ही मैंने हमेशा अपनी खुशी देखी। अब, जब इस दुनिया से बिदा लेने का वक्त आ गया तो अपनी एक आंख खो देने का रहस्य तुम्हें बता देना चाहती हूं। तुम्हारे जन्म के कुछ समय बाद ही तुम्हारी एक आंख खराब हो गई थी। भाग्य के भरोसे बैठ जाने की बजाय मैंने अपनी सामर्थ्य के अनुसार तुम्हारी आंख का इलाज करवाया, विशेषज्ञ डॉक्टर को दिखाया। डॉक्टर ने कहा--'बच्चे की यह आंख अब ठीक नहीं हो सकती। इसका एक ही उपाय है कोई अपनी एक आंख इस बच्चे के लिए दान करे तो उसकी आंख इसमें प्रत्यारोपित की जा सकती है।'

मैं गरीब बेसहारा विधवा किसी दूसरे की आंख का प्रबंध कहां से, कैसे करती? मैंने डॉक्टर से कहा--'आप मेरी आंख निकाल कर मेरे बेटे को लगा दें।' डॉक्टर ने कहा--'बात तो वही हुई, आंख तुम्हारी जाए या बेटे की, फर्क क्या रहा? दो में से एक को एकाक्षी रहना ही होगा।' मैंने डॉक्टर से निवेदन किया--'बेटे की दो आंखें देखकर मैं स्वयं के एकाक्षी होने की बात भूल जाऊंगी। एक क्या, अगर दोनों आंखों की जरूरत पड़े तो मैं अंधी होने के लिए भी तैयार हूं, लेकिन अपने बेटे को मैं विकलांग देखना नहीं चाहती।' डॉक्टर ने मेरी इच्छा का सम्मान करते हुए मेरी एक आंख तुम्हें ट्रांसफर कर दी। मेरे एकाक्षी होने का यही रहस्य है। तुम सुखी रहो, अपना खूब विकास करो, यही मेरा आशीर्वाद है।' मां के उस पत्र को पढ़कर अफसर बेटे ने अपना सिर थाम लिया। लेकिन अनुताप के सिवाय अब क्या हो सकता था?

ये प्रवचन माताएं भी हमारी मां हैं। साधु-साध्वियां इनको मां तुल्य मानकर हमेशा इनका ध्यान रखें। ईर्या समिति हमारी मां है। चलते समय हम विशेष जागरूक रहें। युगप्रमाण भूमि को देख-देख कर चलना, किसी जीव की हिंसा न हो जाए और चींटियों को देखकर विशेष सावधानी से पांव रखना, उनको पार

करने के बाद यथासंभव, यथापेक्षा पांव का प्रतिलेखन करना चाहिए कि पांव में कोई चींटी तो नहीं लगी है। क्या पता कोई अधमरी चींटी चिपकी हुई हो, उसे हम अलग कर सकते हैं। चलते समय हरियाली आ जाए तो हमारे पांव थम जाने चाहिए। चलते समय पृथ्वीकाय मिट्टी आ जाए तो उसी समय हमारी गति अवरुद्ध हो जाए। मन में चिंतन आए कि इस मिट्टी पर पांव कैसे रखा जा सकता है? जानकारी करें कि मिट्टी सचित्त है या अचित्त? इस संदर्भ में पूछताछ करें या अपने विवेक से जानकारी करें। सचित्त है तो उस पर पांव न पड़ें, ऐसा हमारा प्रयास होना चाहिए। यह जीवों के प्रति अहिंसा की साधना है, अनुकंपा की साधना है।

चलते-चलते भी साधना की जा सकती है। जैसे ध्यान करना साधना है, माला फेरना साधना है, वैसे ही चलना भी साधना है, सेवा करना भी साधना है और कभी-कभी मैं तो सोचता हूं कि जहां सेवा की बात आए, वहां माला भले ही एक कम फेर लें, लेकिन सेवा को प्राथमिकता दें। कोई रुग्ण साधु है और उसे तत्काल सेवा की अपेक्षा है तो माला उसी समय रख दें और स्वयं को उसकी सेवा में नियोजित कर दें। मन में उस समय यह भाव रहे कि इस साधर्मिक साधु की सेवा, माला फेरने से कहीं ज्यादा जरूरी है। माला की पूर्ति तो फिर कर लेंगे, लेकिन सेवा के अवसर से नहीं चूकना है।

हम भाषा समिति पर भी ध्यान दें। बोलने में भी जागरूकता रहे और सावद्य भाषा के प्रयोग से बचें। आठों समिति-गुप्तियों के प्रति हमारी जागरूकता रहेगी तो हमारी ये माताएं हमारे महाव्रतों का ध्यान रखेंगी। कपड़े के बारे में कहा गया कि कपड़े का तुम ध्यान रखोगे तो कपड़ा भी तुम्हारी आब रखेगा। उसकी शोभा तुम रखोगो तो वह भी तुम्हारी शोभा रखेगा। कपड़े को जहां-तहां डालकर गंदा कर दिया तो फिर कपड़ा भी तुम्हें शोभित नहीं करेगा। इस प्रकार माताओं का हम ध्यान रखेंगे तो माताएं हमारी सुरक्षा के लिए कटिबद्ध रहेंगी।'

Øe'k%

ije J); vkpk;Jh egkJe.k tlky dh vkj

l?ku iM lkfUuè; e

„, ekpA गादाणा के मार्गवर्ती गांव राड़ावास में पूज्यप्रवर का आगमन। पूज्य आचार्यवर यहां की राधाकृष्ण गोशाला में पधारे। यहां पांच सौ गाएं हैं। जालीदार बाड़े में यहां नन्हें-नन्हें खरगोश भी दृष्टिगत हुए। जैन-अजैन घरों के साथ यहां के सुखालय हॉस्पिटल का स्पर्श करने के बाद पूज्य आचार्यवर ने गांववासियों तथा स्कूल के छात्र-छात्राओं की समवेत परिषद् को संबोधित किया व बच्चों को नशामुक्ति का संकल्प करवाया। गादाणा से राड़ावास तक टूटी-फूटी सड़क, फिर उसके बाद मुरड़िया सड़क पर लगभग पांच किमी. चलने के बाद पूज्यवर मुख्य मार्ग पर पहुंचे। आचार्यवर के साथ बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं सहयात्री बने।

आज सवेरे से ही आकाश में धूल का गुब्बार छाया हुआ था, जिसे भेदने में सूर्य की रश्मियां भी असमर्थ हो रही थीं। इससे गर्मी व धूप की तपन से तो राहत मिली, किन्तु वातावरण में छाई धूल ने सांस लेना मुश्किल कर दिया। आज मौसम का मिजाज पूरी तरह से बदला हुआ था। मार्ग में माइल स्टोन पर गुड़ारामसिंह तीन किमी. आलेखित था। उसके परिपार्श्व में श्री कपूरचन्द गादिया की प्याऊ के बाहर एक सघन वटवृक्ष के नीचे सड़क पर बिछाए गए आसन पर आचार्यवर विराजमान हो गए। वहां पूज्य आचार्यवर ने उदक पान किया। जल ग्रहण करने के बाद आचार्यवर ने सघन व विशाल वटवृक्ष को निहारा तो उनका कवि हृदय जाग उठा। पूज्य आचार्यवर ने तत्काल एक पद्य की रचना करते हुए कहा--

l?ku iM lkfUuè; e] dju cB ikuA
ekle cMk Igkouk] vc vkx iLFkku Ï

पद्य के तीन चरणों को पूज्यवर ने विराजित मुद्रा में फरमाया और उठते-उठते चौथे चरण का उच्चारण किया।

lkèohie[kk uoykth dh tUeHkfe e

लगभग आठ किमी. का विहार कर पूज्य आचार्यप्रवर गुड़ारामसिंह पधारे। गांव की परिक्रमा के दौरान आचार्यवर ने तेरापंथ भवन का स्पर्श किया। तेरापंथ धर्मसंघ की तीसरी साध्वीप्रमुखा नवलांजी की इस जन्मभूमि ने अनेक संयमी आत्माओं को धर्मसंघ को समर्पित किया है। पूरे गांव में अपूर्व उल्लास छाया हुआ था। गुरुदेव तुलसी ने एक बार अपने आगमन के समय ऐसा ही वातावरण देखकर फरमाया था--'गुढ़ा गढ़ बन गया है।'

प्रवचन पंडाल में आयोजित स्वागत कार्यक्रम में तेयुप और महिला मंडल ने गीत का संगान किया। विविध त्याग-प्रत्याख्यान का स्वीकरण करने वालों की एक सूची पूज्य आचार्यचरण को भेंट की गई। कन्यामंडल की कन्याओं ने शब्दचित्र प्रस्तुत किया। स्थानीय सभा के अध्यक्ष श्री मोहनलाल सेठिया ने स्वागत भाषण किया। साध्वी आस्थाप्रभाजी, साध्वी सिद्धप्रभाजी, समणी चैत्यप्रज्ञाजी, समणी रमणीयप्रज्ञाजी एवं मुमुक्षु ललिता ने अपनी पैतृकभूमि में पूज्यप्रवर का स्वागत किया। श्री अमरचन्द गादिया, श्री मनोरथमल गादिया एवं श्री अर्जुनसिंह राठौड़ ने सपत्नीक आजीवन शीलव्रत स्वीकार किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'इतिहास पढ़ना सरल है, पर नया इतिहास गढ़ना कठिन है। आचार्यश्री महाश्रमण नया इतिहास गढ़ रहे हैं। हर दिन एक नया इतिहास निर्मित हो जाता है। आचार्यवर की प्रेरणा से सब लाभान्वित हो रहे हैं।' महाश्रमणीजी ने इस गांव की मिट्टी में जन्मी तेरापंथ की तीसरी साध्वीप्रमुखा नवलांजी का स्मरण करते हुए उनके जीवन पर प्रकाश डाला।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने संबोधि के सोलहवें अध्याय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में इन्द्रिय संयम की प्रेरणा दी।

साध्वीप्रमुखा नवलांजी का स्मरण करते हुए आचार्यप्रवर ने कहा--'नवलांजी हमारे धर्मसंघ की तीसरी साध्वीप्रमुखा थीं। गुड़ारामसिंह की यह एक बड़ी देन है कि ऐसी बहन धर्मसंघ को समर्पित की। इसे मैं इस क्षेत्र की एक बड़ी सेवा मानता हूं। साध्वीप्रमुखा सरदारांजी और गुलाबांजी के बाद नवलांजी साध्वीप्रमुखा बनीं। उन्होंने तीन आचार्यों के सान्निध्य में शासन की सेवा की। आज उनकी जन्मभूमि में मैं उनका स्मरण कर रहा हूं। उस समय संघ विस्तार कम था। फिर भी साध्वीप्रमुखा गुरुदृष्टि को कितना अधिमान देती हैं। साध्वीप्रमुखाओं की कितनी सेवाएं प्राप्त होती हैं। उन्हीं की पीढ़ी में साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी हैं। गुरुदेव तुलसी व गुरुदेव महाप्रज्ञजी के सान्निध्य में रही हैं और अब हमारे पास हैं। आचार्य के सौभाग्य का अंकन इस आधार पर भी होना चाहिए कि उन्हें कैसी साध्वीप्रमुखा प्राप्त है। अच्छी, अनुकूल, योग्य, विनीत, बुद्धिमती, वैदुष्ययुक्त, संघसमर्पित साध्वीप्रमुखा का प्राप्त होना आचार्य के सौभाग्य का परिचायक होता है। गुरुदेव तुलसी के प्रताप से मुझे तो बनी-बनाई साध्वीप्रमुखा प्राप्त है।'

गुड़ारामसिंह पदार्पण के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'गांव के गादिया परिवार के लिए गौरव का विषय है कि नवल सती इस परिवार से संबद्ध थीं। आगे भी गौरव की अभिवृद्धि हेतु परिवार सजग रहे। पारसमलजी गादिया केन्द्र की रास्ते की सेवा 'मामा-भाणजे' के रूप में तथा चतुर्मास में स्वयं सेवा करते हैं। पहले यहां एक दिन का प्रवास निर्धारित था। पारसमलजी व अन्य के निवेदन पर दो दिन कर दिया। यहां की साध्वी सिद्धप्रभाजी, साध्वी आस्थाप्रभाजी, समणी रमणीयप्रज्ञाजी, समणी चैतन्यप्रज्ञाजी और मुमुक्षु ललिता अपना अच्छा विकास करती रहें। यहां के मुनि चिदानंदजी वृद्धावस्था में दीक्षित हुए। साध्वी आस्थाश्रीजी व साध्वी मधुरलताजी का भी यही गांव है। गुड़ारामसिंह कांठा का अच्छा क्षेत्र है। यहां के लोगों में धार्मिक

चेतना विकसित होती रहे।' कार्यक्रम का कुशलता से संचालन श्री जयप्रकाश गादिया ने किया। रात्रि में पारिवारिक सेवा व प्रेरणा-पाथेय का उपक्रम चला।

„f ekpA गुड़ारामसिंह प्रवास का दूसरा दिन। परम श्रद्धेय आचार्यवर ने प्रातः यहां के सभी जैन घरों का स्पर्श किया। प्रातराश के उपरान्त आचार्यप्रवर प्रातःकालीन कार्यक्रम हेतु जैन श्वेताम्बर तेरापंथ मानव हितकारी संघ राणावास द्वारा संचालित श्री आचार्य तुलसी जैन विद्या निकेतन उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। यहां पूज्यप्रवर से मंगलपाठ सुनकर श्री प्यारेलाल विनोदकुमार सुनीलकुमार पीतलिया परिवार द्वारा विद्यालय का नाम लोकार्पित किया गया। आचार्यवर ने विद्यालय भवन का अवलोकन भी किया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में विद्यालय की छात्राओं ने अणुव्रत गीत का संगान किया। संस्थान के अध्यक्ष श्री अमरचन्द लूंकड़, मंत्री श्री मोहनलाल गादिया ने आचार्यवर का आस्थासिक्त स्वागत करते हुए संस्थान के विषय में अवगति दी। श्री माणकचन्द डोसी, डा. शान्तिलाल सेठिया, श्रीमती नीता गादिया, श्री प्यारेलाल पीतलिया, श्री निर्मल रांका आदि ने अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। गुड़ारामसिंह के युवकों ने गीत के माध्यम से अपने भावों को प्रस्तुत किया। क्षेत्रीय विधायक श्री केसाराम चौधरी और पाली जिलाप्रमुख श्री खुशवीरसिंह ने अपने विचार व्यक्त किए। मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायी वक्तव्य हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में हाजरी का वाचन किया। आचार्यवर के मंगल उद्‌बोधन की प्रथम किश्त इसी विज्ञप्ति के प्रारंभ में प्रकाशित है। हाजरी वाचन के पश्चात् मुनि मृदुकुमारजी एवं मुनि सुबोधकुमारजी ने लेखपत्र का उच्चारण किया। पूज्य आचार्यवर ने मुनि सुबोधकुमारजी को प्रथम बार लेखपत्र का उच्चारण करने पर पुरस्कारस्वरूप पांच कल्याणक एवं मुनि मृदुकुमारजी को दो कल्याणक बक्शीश किए। साधु-साध्वियों ने पंक्तिबद्ध खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया।

आचार्यवर ने विद्यालय के विषय में कहा--'विद्यालय का नाम गुरुदेव तुलसी और जैनविद्या के साथ जुड़ा हुआ है, इसलिए इसमें अणुव्रत और जैनविद्या का प्रभाव बना रहे। शिक्षकों और विद्यार्थियों के जीवन में अणुव्रत और जैनत्व झलके। नाम का लोकार्पण किया गया। नाम का महत्त्व भी होता है। किन्तु साथ में कार्य भी अच्छा होना चाहिए।' कार्यक्रम से पूर्व आचार्यवर का जवाहर हीरचन्द गादिया राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में भी पदार्पण हुआ।

गुड़ारामसिंह के इस द्विदिवसीय प्रवास में दक्षिण प्रवासी श्रद्धालु बड़ी संख्या में अपने पैतृक गांव पहुंचे। श्रद्धालुओं को पूज्यवर की निकट उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। इस दौरान लोगों ने विविध संकल्प स्वीकार किए। श्री देवराज गादिया ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया।

fo|kHkfe jk.kkokl e Hk0; Lokxr

„„ ekpA परमपूज्य आचार्यप्रवर ने आज प्रातः विहार से पूर्व गुड़ारामसिंह के राजपूत समाज के अनेक घरों का स्पर्श किया। आचार्यवर विहार के दौरान मार्ग के कुछ भीतर की ओर स्थित राणावास गांव में भी पधारे। पूज्यवर के पदार्पण के अवसर पर यहां के तेरापंथ समाज के सभी सत्रह घर व अन्य जैन समाज के अनेक घर खुल गए। पूज्य चरणों के स्पर्श से ये सभी घर पावन हुए। स्थानीय तेरापंथ भवन में कुछ क्षण विराज कर आचार्यवर ने 'हमारे भाग्य बड़े बलवान' गीत का आंशिक संगान किया।

पूज्यप्रवर लगभग ६.०५ किमी. का विहार कर राणावास स्टेशन पधारे। प्रवास स्थल पर पधारने से पूर्व आचार्यवर कांठा महिला शिक्षण संघ द्वारा संचालित संस्थान में पधारे। जुलूस के मध्य स्थानकवासी संप्रदाय की साध्वी राजमतीजी आदि साध्वियों ने पूज्यवर की सन्निधि में उपस्थित होकर वयोवृद्ध साध्वी पुष्पावतीजी को दर्शन देने की प्रार्थना की। पूज्यवर ने उन्हें सायंकाल पधारने का आश्वासन दिया। आचार्यवर जैन श्वेताम्बर तेरापंथ मानव हितकारी संघ द्वारा संचालित संस्थान परिसर में पधारे। श्री अमरचन्द लूंकड़ आदि कार्यकर्ताओं ने पूज्यप्रवर का श्रद्धासिक्त स्वागत किया। यहां पूज्यवर से मंगलपाठ सुनकर नवनिर्मित

'आचार्य महाश्रमण मार्ग' का लोकार्पण श्री मूलचन्द नाहर एवं 'आचार्य महाश्रमण शिशु निकेतन' का लोकार्पण श्री सुरेन्द्र सुराणा परिवार की ओर से किया गया। पूज्यप्रवर का प्रवास परिसर में स्थित जैन तेरापंथ महाविद्यालय में हुआ। यह वही स्थान है, जहां परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने सन् १९८२ में चतुर्मास किया था।

आज सूर्योदय के साथ वि.सं.२०६९ का शुभारंभ हुआ। नववर्ष के प्रथम दिन चैत्र शुक्ला प्रतिपदा के अवसर पर महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियां पूज्य आचार्यवर के उपपात में वंदना करने हेतु उपस्थित हुईं और पक्खी की खमतखामणा के पश्चात् पूज्यवर से नववर्ष का मंगलपाठ सुना।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में संस्थान में अध्ययनरत बी.एड. की छात्राओं द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। संस्थान के अध्यक्ष श्री अमरचन्द लूंकड़, मंत्री श्री मोहनलाल गादिया, श्री संपतराज भंडारी, डा.विनोदकुमार, श्री प्रकाश भंडारी, श्री सुरेन्द्र सुराणा, श्री फूलचन्द तातेड़, श्री घेवरचन्द सुराणा आदि ने अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त किए। राणावास गांव की ओर से भरे गए तीन हजार से अधिक नशामुक्ति के फॉर्म पूज्यवर को समर्पित किए गए। साध्वी काव्यलताजी ने अपनी दीक्षाभूमि में अपने आराध्य की अभ्यर्थना की। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी व मंत्री मुनिश्री के प्रेरक वक्तव्य हुए।

परमपूज्य आचार्यवर ने अपने राणावास आगमन के संदर्भ में कहा--'आज हम विद्याभूमि राणावास आए हैं। जैन श्वेताम्बर मानव हितकारी संघ राणावास तेरापंथ समाज से जुड़ा हुआ एक महत्त्वपूर्ण संस्थान है। कितने-कितने लोगों को यहां पढ़ने का अवसर मिला। यदा-कदा अनेक प्रशासनिक अधिकारी आदि लोग हमें मिलते हैं, जो इस संस्थान में पढ़े हुए हैं। यह काफी विस्तृत संस्थान है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी की यह चातुर्मासिक भूमि है और परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी का महावीर जयंती कार्यक्रम स्थल है। इस संस्थान के मानों कण-कण में केसरीमलजी सुराणा का श्रम और त्याग मुखरित हुआ देखा जा सकता है। यह संस्थान गुणात्मक दृष्टि से और अधिक अच्छा बने तथा आध्यात्मिक उन्नति को प्राप्त होता रहे।' पूज्यवर ने इस संस्थान में स्व.मिश्रीमलजी सुराणा, श्री सुरेन्द्र सुराणा, श्री तेजराज पुनमिया द्वारा दी गई सेवाओं तथा वर्तमान अध्यक्ष श्री अमरचन्द लूंकड़ आदि कार्यकर्ताओं की सेवाओं का उल्लेख किया।

Ickfèk iopuekyk dk lekiu

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में संबोधि के अंतिम सोलहवें अध्याय के इकतीसवें श्लोक की व्याख्या करते हुए सत्य की साधना करने हेतु प्रेरणा प्रदान की और संबोधि प्रवचनमाला को संपन्न करते हुए कहा--'मैं लगभग नौ महीनों से संबोधि पर व्याख्यान करता आ रहा हूं। आज मैं इस शृंखला को विराम देना चाहूंगा। इस प्रवचन शृंखला में मैंने चयनित श्लोकों पर व्याख्या की और मुझे कुछ आत्मसंतोष है कि परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी का एक और अधूरा कार्य मैंने पूरा कर दिया। जीवन के अंतिम दिनों में गुरुदेव महाप्रज्ञजी संबोधि पर व्याख्यान फरमाया करते थे। महाप्रयाण के कुछ घंटों पूर्व उन्होंने तीसरे अध्याय के श्लोकों पर व्याख्यान किया था, किन्तु उनका यह कार्य अधूरा रह गया था। फिर मैंने गुरुदेव के उस अधूरे कार्य को पूरा करने का चिंतन किया। गुरुदेव के जन्मदिवस आषाढ़ कृष्णा त्रयोदशी के दिन मेवाड़ में मैंने इस व्याख्यानमाला को पुनः प्रारंभ किया और आज चैत्र कृष्णा अमावश्या को इसे संपन्न कर रहा हूं। गुरुदेव महाप्रज्ञजी द्वारा प्रणीत संबोधि ग्रंथ संस्कृत वाङ्मय का महत्त्वपूर्ण मनीषायुक्त वैदुष्यपूर्ण ग्रंथ है। इस ग्रंथ में श्लोकों के माध्यम से जैन आगमों का सार और अध्यात्म साधना का सुन्दर पथदर्शन प्रस्तुत किया गया है। भगवद्गीता और संबोधि, इन दोनों ग्रंथों में काफी समानता का दर्शन होता है। इस व्याख्यानमाला के दौरान मन, वचन और काय संबंधी किसी प्रकार का दोष लगा हो तो 'तस्समिच्छामिदुक्कडं'।

सायंकाल आचार्यवर श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन छात्रावास परिसर में स्थित अतिथिगृह में प्रवासित वयोवृद्धा साध्वी पुष्पावतीजी को दर्शन देने पधारे। उनकी सहवर्तिनी साध्वियों ने आचार्यवर की अगवानी की। आचार्यवर के दर्शन पाकर साध्वी पुष्पावतीजी ने अपनी प्रसन्नता को अभिव्यक्त किया। आचार्यप्रवर

व साध्वियों के बीच विविध विषयों पर वार्तालाप हुआ। छात्रावास के छात्रों को पूज्यवर से पावन संबोध प्राप्त हुआ।

रात्रि में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ मानव हितकारी संघ द्वारा संचालित छात्रावास के छात्र-छात्राओं को पूज्यवर ने मंगल पाथेय प्रदान किया। संस्थान के कार्यकर्ताओं ने आचार्यवर की उपासना के दौरान अवगति देते हुए बताया--सन् १९४५ से प्रारंभ इस संस्थान में वर्तमान में कक्षा छह से कक्षा बारह तक के एक सौ पचहत्तर विद्यार्थी, बी.एड. में ९६ छात्राएं व कालेज में दो सौ पच्चीस विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। छात्रावास में ५१ छात्राएं और २६ छात्र रहते हैं। आगामी सत्र से 'आचार्य महाश्रमण शिशु निकेतन' नामक प्राथमिक स्तर पर इंग्लिश मीडियम स्कूल तथा कॉलेज के अन्तर्गत ज्योलॉजी और बी.सी.ए. प्रारंभ करने की योजना है।

राणावास स्टेशन पर तीस जैन घर आचार्यवर के पदार्पण के अवसर पर खुल गए। रात्रि में राणावास गांव और स्टेशन--दोनों के जैन परिवारों को आचार्यवर की उपासना का अवसर प्राप्त हुआ।

fHk{k Hkfe flfj;kjh e X;kjgo vfHk'kkLrk

„… ekpA परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आज प्रातः राणावास से सिरियारी की ओर प्रस्थित हुए। मार्गवर्ती गुड़ासूरसिंह गांव के भीतर आचार्यवर का पदार्पण हुआ। सैकड़ों ग्रामीणों ने पूज्यचरण की भावभीनी अगवानी की। आचार्यवर के पदार्पण से यहां के नौ तेरापंथी परिवार अतिशय आह्लादित थे। संक्षिप्त कार्यक्रम में श्री गौतम मूथा, श्रीमती लाडली मूथा, श्री पूनाराम, श्री फूलचन्द तातेड़ आदि ने पूज्यवर के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए। ग्रामीणों द्वारा भरे गए एक सौ इक्कीस व्यसनमुक्ति के फॉर्म पूज्यवर को उपहृत किए गए। परमपूज्य आचार्यवर ने अहिंसा यात्रा के उद्देश्यों की चर्चा करते हुए ग्रामीणों को पवित्र जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान की। यहां से प्रस्थान करते हुए पूज्यप्रवर श्री मूलचन्द नाहर के अनुरोध पर नाहर परिवार के सती माता मंदिर में भी पधारे।

आचार्यवर लगभग १२.०५ किमी. का विहार कर महामना आचार्य भिक्षु की निर्वाणस्थली सिरियारी पधारे। आचार्यवर के पदार्पण से सिरियारी के जैन-जैनेतर समाज सहित देश के विभिन्न प्रान्तों से समागत श्रद्धालुओं में उल्लास का वातावरण था। स्वागत जुलूस के मध्य पूज्यवर 'पक्की हाट' में पधारे। इसी ऐतिहासिक हाट में तेरापंथ के प्रणेता आचार्य भिक्षु का महाप्रयाण हुआ था। पूज्यवर ने यहां कुछ क्षण ध्यान किया, तत्पश्चात् गांव की संकरी गलियों से होता हुआ भव्य स्वागत जुलूस आचार्य भिक्षु समाधिस्थल परिसर में पहुंचा। पूज्यप्रवर ने समाधिस्थल पर पधार कर कुछ क्षण तक ध्यान किया।

समाधिस्थल परिसर में पूज्यवर से मंगलपाठ सुनकर श्री भैरूंलाल बम्बोली परिवार द्वारा 'भिक्षु दीर्घा' भवन, श्री सुरेन्द्र सुराणा परिवार की ओर से साध्वीप्रमुखा दीर्घा, स्व.अमरचन्द आच्छा परिवार की ओर से 'भोजनशाला भवन' का, श्री दानचन्द घोड़ावत परिवार की ओर से 'हेम द्वार' का तथा श्री चुन्नीलालजी गोगड़ परिवार की ओर से 'महाश्रमण प्रेक्षा निलयम' का लोकार्पण किया गया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर त्रिदिवसीय प्रवास हेतु परिसर में स्थित महाप्रज्ञ भवन में पधारे। तेरापंथ इतिहास मनीषी स्व.मुनि सागरमलजी 'श्रमण' के सहअग्रणी मुनि मणिलालजी ने पूज्यप्रवर को प्रथम बार आचार्य के रूप में वर्धापित किया। प्रातःकालीन कार्यक्रम के प्रारंभ में तेरापंथ महिला मंडल सिरियारी की बहनों ने स्वागत गीत का संगान किया। समाधिस्थल संस्थान के उपाध्यक्ष श्री मुकनचन्द मेहता ने अपने उद्गार व्यक्त किए। मुनि मणिलालजी के सहवर्ती मुनि राजकुमारजी और मुनि कुशलकुमारजी ने गुरुदर्शन से प्राप्त प्रसन्नता को अभिव्यक्ति दी। मुमुक्षु अशोक बोथरा ने पूज्यवर से दीक्षा की अनुमति प्रदान करने की प्रार्थना की। श्री चन्द्रप्रकाश बोथरा ने अपने अनुज अशोक को दीक्षित करने का अनुरोध किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अत्यन्त कृपा कर आषाढ़ शुक्ला द्वितीया, तदनुसार २१ जून २०१२ को पचपदरा में मुमुक्षु अशोक को मुनि दीक्षा प्रदान करने की उद्घोषणा की। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी

एवं मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में महामना आचार्य भिक्षु का पावन स्मरण करते हुए उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं को प्रस्तुति दी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में समय नियोजन की प्रेरणा प्रदान की और सिरियारी आगमन के संदर्भ में कहा--'मुझे आत्मतोष हो रहा है कि मैं महामना परमपूज्य परम श्रद्धेय आचार्य भिक्षु की महाप्रयाण भूमि में गुरुदेव महाप्रज्ञजी के बाद प्रथम बार आया हूं। यहां आना बहुत महत्त्वपूर्ण है। लोग प्रार्थना करते हैं, अगर न भी करें तो भी हमें यथावसर यहां आना चाहिए। यह स्वामीजी का स्थान है। भवितात्मा अणगार जैसे उस महान् संत ने यहां तप तपा, साधना की और यहीं अंतिम सांस ली। हम उस महापुरुष के प्रति प्रणत हैं। उनमें अद्भुत मनोबल, आत्मबल और साधना का बल था। ऐसा प्रतीत होता है कि उनमें पूर्वजन्म की साधना का भी बल था। उनका ज्ञान और उनकी साधना नैर्मल्य को प्राप्त थी। ऐसे महापुरुष की महाप्रयाण भूमि में हम आज आए हैं।

मैं सिरियारी आया हूं, किन्तु तेरापंथ इतिहास मनीषी सागरमलजी स्वामी से नहीं मिल सका। वे हमारे धर्मसंघ के अनेक विशेषताओं से संपन्न मुनि थे। उन्हें इतिहास का अच्छा खासा ज्ञान था। एक इतिहास मनीषी आखों से ओझल हो गया। मैं यहां उनकी प्रयाणभूमि पर बड़े सम्मान के साथ उनका स्मरण करता हूं। उनके साथ लंबे समय तक रहे मुनिश्री मणिलालजी स्वामी हमारे धर्मसंघ के रचे-पचे संत हैं। सेवाभावी भाईजी महाराज की सेवा में रहे हैं और मुनिश्री सागरमलजी स्वामी के साथ इनका कोई संस्कार था। उनका जाना इनके मन को व्यथित करने वाला हो सकता है। किन्तु मणिलालजी स्वामी खूब प्रसन्नचित्त रहें, अपने स्वास्थ्य की संभाल रखें। अब मुनिश्री मणिलालजी स्वामी विधिवत अग्रणी का दायित्व संभालें। कदाचित इन्हें गुरुकुलवास में रखूं तो साझ के अग्रणी के रूप में और न्यारा में रखूं तो बहिर्विहार के अग्रणी के रूप में रहें। मुनि राजकुमारजी को मैंने सरदारशहर से यहां भेजा था। मैं इन्हें साधुवाद देना चाहूंगा कि ये भयंकर गर्मी के मौसम में अकेले चलकर यहां आ गए। बहुत अच्छी निष्ठा का परिचय दिया। आगे भी अच्छी सेवा और अच्छा कार्य करते रहें। मुनि कुशलकुमारजी को दीक्षा के बाद जल्दी ही मुनिश्री सागरमलजी स्वामी के पास रखा गया था। ये भी अच्छी साधना और इतिहास का अच्छा अध्ययन करते रहें।'

vkpk; Z fHk{k jktdh; mPp ekè;fed fo|ky; dk ykdki.k

„† ekpA सिरियारी प्रवास का दूसरा दिन। आचार्यवर प्रातः समाधिस्थल पर पधारे और वहां कुछ क्षण ध्यान किया तत्पश्चात् परिसर के कुछ भवनों व निर्मीयमाण गुफाओं का अवलोकन किया। पूज्यप्रवर गुरुकुलवास में कार्यरत कासीद सज्जनसिंह के घर भी पधारे। सज्जनसिंह पूज्यवर के महान अनुग्रह को प्राप्त कर अतिशय आह्लादित था। पूज्यप्रवर से उसने सपत्नीक गुरुधारणा स्वीकार की।

प्रातराश के उपरान्त पूज्य आचार्यप्रवर प्रवास स्थल से लगभग डेढ़ किमी. दूर स्थित आचार्य भिक्षु राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के नवनिर्मित भवन में पधारे। पूज्यवर से मंगलपाठ सुनकर श्री मांगीलाल बस्तीमल छाजेड़ परिवार द्वारा भवन का लोकार्पण किया गया। यहां आयोजित कायक्रम में स्थानीय उपसरपंच श्री अल्लाबख्श, श्री मांगीलाल बस्तीमल छाजेड़, अध्यापक श्री महेन्द्र मेवाड़ा, ठाकुर दिलीपसिंहजी आदि ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। पूज्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में आचार्य भिक्षु के नाम से जुड़े इस विद्यालय के प्रति शुभाशंसा व्यक्त करते हुए विद्यार्थियों को ज्ञान के साथ सदाचार के विकास की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम के पश्चात् आचार्यवर पुनः प्रवास स्थल पधार गए।

vuko';d fgalk ls cpa

प्रातःकालीन कार्यक्रम में पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में हिंसा के तीन प्रकारों--आरंभजा, संकल्पजा और प्रतिरोधजा की व्याख्या करते हुए जनता को अनावश्यक हिंसा से उपरत होने की प्रेरणा

प्रदान की। पूज्यवर ने प्रसंगवश कहा--'सिरियारी में भाद्रपद शुक्ला त्रयोदशी को धम्मजागरणा होती है। यह एक भक्ति का प्रयोग है। किन्तु पिछली बार हमारे पास संवाद आए कि विद्युत प्रकाश में जीव बहुत हो गए और उनकी हिंसा भी हुई। कभी कोई मौसम में जीव बहुत हो जाते होंगे, किन्तु पिछली बार जानकारी मिली कि हिंसा बहुत हुई। इस विषय में यह कहना चाहूंगा कि धम्मजागरणा के दिन प्रेरणा दी जानी चाहिए कि स्वामीजी की तेरस है। उपवास हो सके तो अच्छा है, वह न हो सके तो कम से कम रात्रि भोजन का प्रत्याख्यान तो करो। वह भी चौविहार न हो सके तो तिविहार त्याग करो। ऐसा होता है तो स्वामीजी की आराधना के साथ छोटा-सा तप भी हो सकता है और हिंसा से बचा जा सकता है। कार्यकर्ता भी ध्यान दें कि रात्रि में प्रकाश अपेक्षित होता है, किन्तु अनावश्यक विद्युत प्रकाश न हो। आवश्यक प्रकाश के भी अल्पीकरण का प्रयास करना चाहिए। प्रकाश ज्यादा तीव्र भी न हो, ताकि जीव हिंसा से काफी अंशों में बचा जा सके। कदाचित् मौसम के कारण जीवोत्पत्ति ज्यादा हो जाए तो प्रकाश की मंदता और अल्पीकरण पर और ज्यादा ध्यान देना चाहिए। उसके बावजूद भी ज्यादा जीव हिंसा की संभावना हो तो मंगलपाठ सुनाकर धम्मजागरणा को ही संपन्न कर दिया जाए।'

पूज्यवर के प्रवचन के पश्चात् पाली के सांसद श्री बद्रीराम जाखड़, सिरियारी समाधिस्थल संस्थान के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रजी सुराणा, डा.मनोहर भारती ने अपने विचार व्यक्त किए। चेन्नई तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री देवराज आच्छा, जय तुलसी संगीत मंडल चेन्नई के श्री प्रेमराज ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त करते हुए पूज्यवर से दक्षिण पधारने की प्रार्थना की। तमिलनाडु के सांसद श्री जे.एम.हारून रशीद, एवं राज्यसभा सदस्य बसंता स्टालिन ने अपने भावपूर्ण विचार व्यक्त करते हुए पूज्यवर से दक्षिण भारत की यात्रा का अनुरोध किया। तमिल भाषा में अनूदित 'अणुव्रत आचारसंहिता' और तेयुप हिसार द्वारा अपने क्षेत्र की निर्देशिका आचार्यवर को भेंट की गई।

of)xr gk 'kklu HkfDr

„‡ ekpA आज प्रातः आचार्य भिक्षु की समाधि स्थल पर ध्यान करके परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने सिरियारी गांव में श्रद्धालु घरों का स्पर्श किया। सिरियारी रावले में भी पूज्यप्रवर का पदार्पण हुआ। वहां ठाकुर परिवार के श्री दिलीपसिंह राठौड़ आदि ने पूज्यवर का स्वागत किया। आचार्यप्रवर तेरापंथ भवन में पधारे, जहां पहले कच्ची हाट थी और जहां यदा-कदा स्वामीजी का प्रवास होता था। उसके ठीक सामने वह दुकान है, जहां तेरापंथ के प्रवर्तक आचार्य भिक्षु ने वि.सं.१८६० में भाद्रपद शुक्ला त्रयोदशी के दिन संथारे में अन्तिम सांस ली थी।

आज के प्रातःकालीन कार्यक्रम के साथ राजस्थान प्रान्तीय तेयुप सम्मेलन भी जुड़ा हुआ था। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी ने अपने प्रेरक अभिभाषण में कहा--'युवाशक्ति प्राणवान होती है। हमारे समाज में युवाशक्ति का जो विकास हुआ है, वह अन्य समाज के लिए प्रेरक व उल्लेखनीय है। हमारा इतिहास समर्पण व बलिदान के प्रसंगों से भरा पड़ा है। जब भी संघ हित में अपेक्षा हुई, उस समय दिन-रात, सुविधा-असुविधा को गौण कर समाज के युवाओं ने स्वयं को संघ सेवा में नियोजित कर दिया। ऐसे प्रसंगों से सब प्रेरणा लें।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'सिरियारी सबके आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। इसका कारण आचार्य भिक्षु का जीवन व दर्शन है। वे एक महान योगी, स्थितप्रज्ञ व भवितात्मा अणगार थे। उन्होंने स्वयं के जीवन को अनेक कसौटियों पर कसा और साधा। महाश्रमणीजी ने प्रश्न उपस्थित करते हुए कहा--'आचार्य भिक्षु ने धर्मक्रान्ति कर नए युग का प्रवर्तन किया। पूर्ववर्ती युगप्रधान आचार्यों की शृंखला में क्या उनका नाम नहीं जुड़ सकता? उनका जीवन विलक्षण था, उनका तत्त्वचिंतन गहन था और उनके विचार दूरदर्शितापूर्ण थे।' युवा सम्मेलन के संदर्भ में महाश्रमणीजी ने सफलता

के सात सूत्रों का विशद विवेचन किया।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में युवा सम्मेलन के अंतर्गत रखे गए विषय 'लक्ष्य है ऊंचा हमारा' पर विशद मार्गदर्शन प्रदान किया। आचार्यवर ने कहा--'आचार्य भिक्षु मोक्ष साधना के साधक थे। उन्होंने धर्मक्रान्ति की। क्रान्ति करने वाला जीवन भर क्रान्ति पर कायम रहे, यह बहुत बड़ी बात है। अन्यथा क्रान्ति शान्ति हो जाती है। आचार्य भिक्षु ने जो पथ स्वीकार किया, उस पर अन्तिम श्वास तक चलते रहे, बढ़ते रहे।' महाश्रमणीजी द्वारा प्रस्तुत प्रश्न के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'प्राचीन साहित्य में युगप्रधान के मानक होने चाहिए। युगप्रधान के रूप में आचार्य भिक्षु के लिए क्या कहें? वे तो अनुपम और अनुपमेय थे। वे युगप्रधान के भी सम्मान्य पितामह, प्रपितामह हैं।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'तेरापंथ में संख्या को नहीं, गुणवत्ता को महत्त्व दिया जाता है। यहां योग्य दीक्षा ही अभीष्ट है। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी पर मैंने हर सिंघाड़े व समणी वर्ग को दो-दो दीक्षार्थी तैयार करने का कार्यक्रम दिया है। गीत, लेख आदि का आलेखन महत्त्वपूर्ण हैं, पर उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है दीक्षार्थी तैयार करना। आगम मनीषी मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी स्वामी एक वैरागी लेकर आए हैं। अब मुझे लगता है काम शुरू हो गया है। मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी बहुश्रुत परिषद के सदस्य हैं, विद्वान हैं। ये अभी जैन विश्वभारती से आए हैं।'

संघीय चिंतन की समीचीनता को रेखांकित करते हुए आचार्यवर ने कहा--'हमारे संघीय संस्कार पुष्ट बनें, संघ व संघपति के प्रति श्रद्धा अविचल हो, शासन को प्राथमिकता दें, इससे बड़ा कोई नहीं है। व्यक्तिगत कठिनाई भोग लें, पर शासन पर आंच न आने दें। सब में शासन-भक्ति वृद्धिंगत होती रहे। आचार्य भिक्षु की महाप्रयाण भूमि पर उनका स्मरण करते हुए अपनी साधना के प्रति जागरूक रहें।

dY;k.k ifj"kn d xBu dk fu.k;

तेरापंथ विकास परिषद व केन्द्रीय संस्थाओं का नामोल्लेख करते हुए आचार्यवर ने कहा--'आज ही मेरे मन में एक विचार आया और उसका निर्णय भी मैंने कर लिया। केन्द्रीय संस्थाओं के अध्यक्ष, मंत्री को मैं समाज की क्रीम व महत्त्वपूर्ण व्यक्ति मानता हूं। मैंने इतिहास में देखा कि २६ जून को तेरापंथ की स्थापना हुई। प्रत्येक महीने की २६ तारीख को मध्याह्न लगभग २ से ३ बजे तक का समय इन संस्थाओं के अध्यक्ष, मंत्री के लिए रखा है। सुविधा व अनुकूलता के साथ इस समय का उपयोग कर सकते हैं। इस तारीख को दर्शन कर लिया करें। यह एक प्रकार से परिषद की मीटिंग हो जाएगी। मैंने इसका नाम दिया है 'कल्याण परिषद'। तेरापंथ विकास परिषद के संयोजक व महामंत्री, जय तुलसी फाउंडेशन के प्रबंध न्यासी व एक अन्य, जैविभा यूनिवर्सिटी के चांसलर व वाइस चांसलर तथा अन्य केन्द्रीय संस्थाओं के अध्यक्ष व मंत्री इसमें संभागी बन सकेंगे। इसके लिए औपचारिक आमंत्रण, फोन या कार्ड प्रेषित करने की अपेक्षा नहीं है। अध्यक्ष, मंत्री व अन्य वर्णित पद के अधिकारी की प्रोक्सी न हो। महीने में एक बार लगभग एक घंटे तक चलनेवाली कल्याण परिषद अनिश्चितकाल की अवधि तक कार्यरत रह सकेगी।'

nf{k.k ;k=kk dh mn?kks"k.kk

दक्षिण भारत के विभिन्न क्षेत्रों व विशेषतः चेन्नई से समागत विशाल श्रावक समाज की समुपस्थिति में करुणानिधान आचार्यवर ने कहा--'दक्षिण भारत के लोग लंबे समय से दक्षिण पधारने की प्रार्थना कर रहे हैं। कई बार ये लोग इस उद्देश्य से आए। मैंने वैसे कह दिया कि अब आने की जरूरत नहीं। अब सोचना मेरा काम है। इसके बावजूद अपनी भक्ति भावनावश आ जाते हैं। आज मैं दक्षिण के लिए कुछ कहना चाहता हूं, कुछ बंधन में आना चाहता हूं। (साध्वीप्रमुखाजी व मंत्री मुनिश्री का परामर्श लेने के बाद आचार्यवर ने नमस्कार महामंत्र का समुच्चारण किया और कहा--)

'परम श्रद्धेय परमाराध्य भगवान महावीर को नमस्कार करता हूं। परमपूज्य महामना भावितात्मा अणगार के प्रतिरूप आचार्य भिक्षु को वंदन करता हूं। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी, परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञ, जो मेरे साक्षात् दो गुरु रहे हैं, जिनके चरणों में रहा हूं, उन दोनों गुरुओं को नमन करता हूं। साध्वीप्रमुखाजी को अभिवादन करता हूं। श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री को वंदना करता हूं। अपने सभी रत्नाधिक संतों को भी वंदना करता हूं। हमारे छोटे संत व साध्वियों को वात्सल्यभाव से निहार रहा हूं। समणश्रेणी को भी निहार रहा हूं। इसके बाद कहना चाहता हूं--

- द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, स्वास्थ्य, संघ की स्थितियां--इन सबकी अनुकूलता रहती है तो उचित अवसर आने पर दक्षिण की यात्रा करने का भाव है।
- दक्षिण भारत की यात्रा में एक चतुर्मास बेंगलुरु में करने का भाव है।
- एक चतुर्मास चेन्नई में करने का भाव है।
- एक चतुर्मास हैदराबाद में करने का भाव है।

दक्षिण यात्रा कब करना--यह विचारणीय है। उड़ीसा तक तो जाने का मैंने कह दिया है। उसके बाद तो बंधन नहीं किया है। अब यह कहना चाहता हूं--

- दो विकल्प हैं, पहला--यदि हमारे स्वास्थ्य आदि की स्थितियां अनुकूल रहती हैं, धर्मसंघ की अनुमति मुझे ठीक तरह से मिलती है, संघ की स्थितियां यदि अनुकूल रहती हैं, सब अनुकूलताएं ठीक लगती हैं तो उड़ीसा के बाद दक्षिण जाने का भाव है।
- दूसरा--यदि स्थितियां अनुकूल नहीं रहती हैं तो उड़ीसा के बाद राजस्थान आने का भाव है। फिर यथासमय दक्षिण जाने का भाव है। ये दोनों विकल्प हैं।

jfookjh; dk;Øe e iopu dk iHkko jg

आचार्यवर ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा--'रविवारीय कार्यक्रम व्यवस्थित होने चाहिए। बहिर्विहारी साधु-साध्वियों एवं समणीवर्ग के सान्निध्य में चलने वाले कार्यक्रमों में रविवार के दिन प्रातः मुख्यतया व्याख्यान होना चाहिए। महीने में एक रविवार को कार्यक्रम किया जा सकता है। शेष रविवारों को कुछ कार्यक्रम अपेक्षित हों तो पहले मूल व्याख्यान देने के बाद कुछ किया जा सकता है। मूल बात है लोगों को आध्यात्मिक खुराक मिलनी चाहिए, संतोष होना चाहिए।'

fl[kk, Jkod ifrØe.k

प्रेरणा के स्वर में आचार्यवर ने आगे कहा--'साधु-साध्वियां एवं समणवर्ग लोगों को श्रावक प्रतिक्रमण सिखाने का प्रयास करें। यह अभियान के रूप में चले। तेरापंथ भवनों में यथासंभव पक्खी का प्रतिक्रमण होना चाहिए। इस संदर्भ में उपासक-उपासिकाएं अनुकूलता के साथ प्रतिक्रमण कराने का प्रयास करें। इसमें कैसेट/सीडी का प्रयोग भी हो सकता है।

कार्यक्रम में श्री सुमतिचन्द गोठी, अ.भा.तेयुप के अध्यक्ष श्री संजय खटेड़ के प्रासंगिक वक्तव्य हुए। भीलवाड़ा के चौदह वर्षीय मुदित बड़ोला ने स्वयं द्वारा आचार्यश्री की अभ्यर्थना में रचित बहत्तर पद्यों की पांडुलिपि उपहृत की। डा. एन.एल. कच्छारा की पुस्तक 'जैन मेटाफिजिक्स एण्ड साइंस ए कंपेरिजन', गणेशमुनि शास्त्री की 'समय का शिलान्यास' तथा 'आओ, जैन श्रावक बनें' भेंट की गई। इसके साथ 'मरुधर रत्नमाला-२०१२' तथा 'सम्पर्क बोरीवली' भी उपहृत हुईं। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आज विशाल समवसरण खचाखच भरा हुआ था। पार्श्ववर्ती बरामदों व अन्य जगहों पर बैठे व खड़े लोग प्रवचन से लाभान्वित हुए। मेवाड़, मारवाड़ व सुदूर दक्षिण ही नहीं, प्रायः पूरे देश से श्रद्धालु सिरियारी पहुंचे। कार्यक्रम में उपस्थिति लगभग छह हजार आंकी गई। विभिन्न क्षेत्रों से लोग बसों और छोटी गाड़ियों

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

से आए। इस त्रिदिवसीय प्रवास में परिसर में चतुर्मास जैसी रौनक रही। लोगों को ठहराने के लिए राणावास में भी व्यवस्था करनी पड़ी। गांव में लगभग पैंतीस घर खुले। आचार्यवर ने मुनि मणिलालजी का चतुर्मास सिरियारी घोषित किया।

अ.भा.तेयुप के तत्त्वावधान में आयोजित राजस्थान प्रान्तीय युवा सम्मेलन में लगभग पांच सौ युवाओं ने भाग लिया। इसके विभिन्न सत्रों में मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि जिनेशकुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी, श्री आर.एस.सोहेल ने प्रशिक्षण दिया। अध्यक्ष श्री संजय खटेड़, महामंत्री श्री प्रफुल्ल बेताला व अन्य पदाधिकारियों के प्रासंगिक वक्तव्य हुए।

vkn'k lkfgR; l?k dk HkV

३१००/- श्री मांगीलाल झाबक (भीलवाड़ा-सूरत) को 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सोहनदेवी, सुपुत्र व पुत्रवधू संपतलाल-जतनदेवी, कैलाशचन्द-अंजनादेवी, प्रकाशचन्द-स्नेहा, सुपौत्र व पौत्रवधू राहुल-श्वेता, पंकज, चिन्तन, दर्शन, हर्ष व सुपौत्री प्रज्ञा झाबक द्वारा प्रदत्त।

२५००/- स्व.श्रीमती बक्सूबाई (धर्मपत्नी-श्री डहचन्दजी बिनायकिया, मजल-समदड़ी) के प्रभावक संथारे के उपलक्ष्य में उनकी सुपुत्री श्रीमती मोहनीदेवी-मांगीलाल बुरड़ (जोधपुर), श्रीमती कमलादेवी-पारसमल तलेसरा (बेंगलुरु), श्रीमती शान्ता-सुभाष भंसाली (पूना) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री बी.सी.शांतिलाल कातरेला (बगड़ी-चेन्नई) को 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सिरियादेवी, सुपुत्र व पुत्रवधू सन्तोष-माला, अनिल-बीना, सुपौत्र अंकित, मुदित कातरेला द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री सोहनलालजी बाफना (राशमी) एवं स्व. भंवरलालजी बाफना (अहमदाबाद) को 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में कुन्दनमल-मंजुला, भगवती-प्रतिभा, सुशील-संगीता, प्रयास, तन्मय, श्रद्धा, सिद्धि, सरस्वती बाफना, अहमदाबाद द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री करणलाल चींपड़ (लावासरदारगढ़-चेन्नई) को 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती ललितादेवी, सुपुत्र व पुत्रवधू विमलकुमार-मंजु, चन्द्रेशकुमार-विजया, सुरेशकुमार-यशवंता, सुपौत्र व पौत्रवधू अमृतकुमार-रीना, चेतन, शुभम एवं सुपौत्री समीक्षा, नीतीक्षा चींपड़ द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. सुन्दरलालजी लोढ़ा (रेलमगरा) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र चन्द्रसिंह, दिलीपकुमार लोढ़ा द्वारा प्रदत्त।

nh{kk ?kk"k.kk

„Š ekpA परमपूज्य आचार्यप्रवर ने मुमुक्षु शीतल (मुसालिया-चेन्नई) को जसोल चतुर्मास में दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की है।

d'koilkn pronh] icU/kd&vkn'k lkfgR; l?k] }kjk&tu 'orkEcj rjkiFkh lHkk]
ik- ckykrjk&…†† ,„„] ft- ckMej ¼jktLFkku½ Qku % 09680055381] 09352404641
fnYyh dk;ky; dk Qku 011&23234641 Email : adarshsahityasangh@yahoo.com
idk'ku fnukd % 31&3&2012

•

vkn'k lkfgR; l?k] 210] nhun;ky mik/;k; ekx] ub fnYyh&110002 d fy, cPNjkt dBkfr;k VLVh }kjk idkf'kr
rFkk iou fiVl] uohu 'kkgnjk] fnYyh&110032 l efnrA lEiknd % **d'koilkn pronhA**